Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

फौजी मेहर सिंह के काव्य में किसान जीवन का वर्णन

Kuldeep Sharma*

Lecturer in Hindi, GSSS Singowal, Jind, Haryana

***सार** – भारत एक कृषि प्रधान देश है। जिसकी काफी बड़ी जनसंख्या कृषि कार्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। इसके बावजूद यहां कृषि कार्य जोखिम भरा है। कड़ी मेहनत के बावजूद किसान को अपना जीवन यापन करने के लिए कृषि कार्य से उतनी आमदनी नहीं हो पाती कि वह अपनी सभी जरूरतों को आराम से पूरा कर सकें। हम देखते हैं कि हर दिन अखबारों में किसानों की आत्महत्या से जुड़ी हुई खबरें आती हैं। इसका प्रमुख कारण यही है कि कृषि कार्य में निश्चिता नहीं है। यह पूरी तरह से प्रकृति के ऊपर निर्भर है। यदि प्रकृति में अचानक से कोई उतार चढ़ाव होता है तो उसके कारण किसान की मेहनत पर पानी फिर जाता है और दूसरी फसल के लिए, अपना परिवार चलाने के लिए किसान को कर्ज लेना पड़ता है।*

-------------------------------- X --------------------------------

पुराने समय में भारत के अलग अलग हिस्सों में अलग-अलग तरह की कृषि से जुड़ी व्यवस्थाएं काम रही है और उनमें किसानों को भारी लगान देना पड़ता था, जिसके कारण किसानों की आर्थिक स्थिति सही नहीं हो पाती थी। जमींदारी प्रथा के कारण तथा साथ ही जो सरकारी व्यवस्था थी, उसमें किसान अपने आप को असहाय महसूस करता था। किसान का शोषण केवल जमींदार ही नहीं बल्कि इस व्यवस्था से जुड़े अन्य लोग भी करते थे। चाहे उनमें कर्ज देने वाले साहूकार, सूदखोर आदि मिलकर किसान का शोषण करते थे। समय-समय पर किसानों की स्थिति को सुधारने के लिए उपाय होते रहे हैं उनमें चौधरी छोटूराम से लेकर के वर्तमान में स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट का हवाला दिया जाता है,जिसमें स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि किसानों की दशा को सुधारने के लिए जरूरी है,किसानों की आय को बढ़ाया जाए और उसके लिए किसानों को उनकी फसल के उचित दाम दिलाने जरूरी है। वर्तमान सरकार ने लक्ष्य निर्धारित किया है कि किसानों की आय को 2022 तक दुगना कर दिया जाएगा। फौजी मेहर सिंह जिस समय अपने लोक साहित्य की रचना कर रहे थे उन्होंने किसानों की समस्याओं को अपने काव्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। और किसान की स्थिति कितनी दयनीय थी इस बारे में उन्होंने शपथ शब्दों में कहा है। उसका कारण स्पष्ट है क्योंकि फौजी मेहर सिंह का जन्म किसान परिवार में हुआ था और उस समय का सारा ताना-बाना किसानों के इर्द-गिर्द ही घूमता था, लेकिन इसके बावजूद किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। मेहर सिंह कहते हैं-

देख रोंगटे खड़े होग्ये या मेरी छाती धड़कै।

गरीब किसान की जिंदगी क्यूकर बीते सै मर पड़ कै।[1]

किसान अपने खेत में उपज के लिए सभी मौसम में चाहे आकाश से कितनी भयंकर गर्मी या सर्दी पड़े,मूसलाधार बारिश होती हो, उसको सभी परिस्थितियों में अपना काम को जारी रखना पड़ता है। सारे संसार का पेट किसान अपनी मेहनत से फसल पैदा करके भरता है,लेकिन खुद की स्थिति इस तरह की नहीं है कि वह अच्छे कपड़े पहन सके,अच्छे से पैरों में जूते पहन सकें।सर्दी गर्मी से बचाव के लिए अपने लिए उपाय कर सके।फौजी मेहर सिंह कहते हैं-

गर्मी महं आकाश तपै कोरी आग बरसती।

नीचै धरती आग उगलती दुनिया पड़ै तरसती।

पाटी धोती टूट्टे लितर पेट में आग सिलगती।

शिखर दुफहरी पड़ै पसीना छाता कैड ना दिखती ।

आधी रात तक पाणी बाहवै फैर भी उट्ठै तड़कै।[2]

सारे व्यापार कृषि पर आधारित है शासन व्यवस्था में कृषि का प्रमुख योगदान था और किसान अपनी मेहनत से हर प्रकार के अनाज, दाल,सब्जियां आदि तैयार करता है। एक क्षण के लिए भी वह खाली नहीं होता,लेकिन इन सबके बावजूद ऐसा कोई नहीं जो किसान के बारे में सोचे, व्यापारी हो या सरकार सभी किसान का शोषण करने में लगे हुए थे। फौजी मेहर सिंह कहते हैं-

www.ignited.in

राजकाज सब इसके ऊपर जो शासन सरकार करै।

सारी मंडी मील तिजारत छोटा बड़ा व्यापार करै।

कपड़ा लता नाज दाल और धनियां मिर्च तैयार करै।

एक मिनट भी सरै ना इस बिन फिर बी ना कोए प्यार करै।

जाट मेहर सिंह सोच फिकर म्हं तेरी अखियां फड़कै।[3]

फौजी मेहर सिंह कहते हैं इस देश में राजा से लेकर व्यापारी सभी किसान की सहायता करने के लिए तैयार नहीं है। वह भी जानते हैं यदि किसान ने हल चलाना छोड़ दिया, तो उनका व्यापार और सरकार दोनों मुसीबत में घिर जाएंगे, फिर भी उस शख्स को अपनाने के लिए तैयार नहीं है। और यह मानने के लिए भी कि किसी प्रकार का कोई लाभ किसान को दिया जाए। महेर सिंह कहते हैं-

राजा रईयत लखपति सब देख तेरी गैल लागरे।

हल छूटग्या तै सब मिट ज्यांगे जितने फैल लागरे।

साहूकार कै छौंक लगे तेरै आलण पड़ै ना साग म्हं।

तेरी बीर जवारा ढोवै सेठाणी सूंघै फूल बाग म्हं।

तनैं सोवण नै खाट थ्यावै ना उनकै रूई के सैं पहल लागरे।[4]

इतनी जी तोड़ मेहनत करने के बाद भी किसान साहूकार के सामने हाथ जोड़कर खड़ा रहने के लिए विवश हो जाता है, क्योंकि किसान को उसकी मेहनत का उचित फल नहीं मिलता है, जिसके कारण उसकी स्थिति में सुधार नहीं हो पाता है और कहीं ना कहीं व्यवस्था के दुष्चक्र में पड़ कर वह मजबूर हो जाता है। अपनी फसल को ओने पौने दामों में बेचकर किसी प्रकार से अपने घर को चलाने के लिए और जब दोबारा फसल की बिजाई करनी है तो वह उसके लिए सेठ साहूकार के पास जाकर हाथ जोड़कर पैसे मांगता है। मेहर सिंह ने अपने काव्य में इसका चित्रण इस प्रकार किया है-

ऐडी तक थारै आवा पसीना बल्दां की पूंछ मरोड़ो।

पूंजीपति ना हल बहावै कर सेठाणी नै जोड़ो।[5]

किसान के साथ उसका पूरा परिवार खेती कार्य में लगा रहता है और उनका जीवन भी आरामदायक नहीं होता। कहीं ना कहीं किसान का परिवार भी उसकी कम आय का दुष्परिणाम झेलता है और वह अपनी तरफ से किसान को पूरा सहयोग करता है। किसी प्रकार से वह अपने खेती के कार्य को अच्छी प्रकार से करें और वह भी किसान के साथ जी तोड़ मेहनत करता है। फौजी मेहर सिंह ने किसान की पत्नी का चित्र खींचा है, जिसमें वह किसान के लिए दोपहर का भोजन लेकर गई है और वह कहती है-

मैं कद की रुक्के दे री तूं रोटी खा लिए हाली।

दिन ढलज्या जब फेर खेत नै बाह लिए हाली।

एक मील तैं रोटी ले कै बड़ी मुश्किल तैं आई मैं।

हाली गेल्यां ब्याह करवा कै बहोत घणी दुःख पाई मैं

मत रेते बीच रलावै पिया पन्नेदार मिठाई मैं।

तेरे मरते बैल तिसाये तूं पाणी प्या लिए हाली।[6]

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि श्रम जीवन का अभिन्न अंग है, इसी के आधार पर सर्वहारा समाज खड़ा है।कार्य में लगे हुए सर्वहारा समाज की जीवन कहानी सदियों से चली आ रही है। श्रम का उचित मूल्य लेने के लिए 'कमेरे और लुटेरे 'का ऐतिहासिक द्वंद्व चल रहा है। वर्तमान में किसान राजनीति का भी शिकार हुए हैं। राजनेता अपनी झूठी संवेदना किसानों के प्रति दिखाते हैं,लेकिन जब किसानों के लिए कुछ करने का समय आता है तो अपने किए हुए वादों को भूल जाते हैं। हरियाणवी लोकजीवन कोई भी भाग फौजी मेहर सिंह की रागनीओं से अछूता नहीं है। परिश्रमी किसान के संघर्षमय जीवन का उनकी रागनियों में मार्मिक चित्रण हुआ है। उन्होंने उस जमींदारी प्रथा को भी देखा जिसमें बटाईदारी एवं कर्ज के बदले बंधुवा बनाने का रिवाज था। उन्होंने किसान को अपनी तकरीबन हर रागिनी ने कहीं ना कहीं जोड़ा है। हरियाणा की किसान नेता सर छोटू राम जब महाजनों के अन्याय के विरुद्ध कृषकों के लिए लड़ रहे थे,तो मेहर सिंह ने भी उस किसान की दुर्दशा का अपनी रागिनीओं में मार्मिक चित्रण किया है। कर्मवीर,संघर्षपूर्ण जीवन यापन करने वाले उस किसान का चित्र फौजी मेहर सिंह ने किया है,जिसे युगों युगों से साहूकार लूट रहा है। त्यागी, दानवीर, महान्यायवादी को न्याय कब मिलेगा। मेहर सिंह की रागनी में किसान की व्यथा और उसके आंसुओं का इतिहास है। किसान नायक, नायिका को समझाता है उसका जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण है अतः वह अपने प्रणय-सूत्र उसके साथ जोड़ने का प्रयास ना करें। मेहरे सिंह कहते है- मेहरसिंह की गेल्यां जा कै बिचल ज्यागी जाटां म्हं।

सिर पै भरोटा गोड्डे टूट ज्यां दो दो कोस की बाटयाँ म्हं।

www.ignited.in

करै लामणी फांस चालज्या हाथ फूटज्यां टांटां म्हं ।[7]

इस प्रकार हम पाते हैं किसान जीवन जो सदियों से चला आ रहा है उसमें वह बदलाव अभी तक नहीं हो पाए हैं जिसका वह हकदार है।आज भी वह इंतजार कर रहा हूं कि किसी प्रकार से उसकी फसल का उचित मूल्य उसको मिल सके,जिससे वह अपनी मेहनत के साथ साथ अपने जीवन के सपनों को पूरा कर सके ।वह चाहता है कि उसके बच्चे भी अच्छे स्कूलों में पढ़े,मुसीबत के समय उसको भी उचित स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें और उसका जीवन संघर्ष के तुलनात्मक आरामदायक बन सके।

संदर्भ सूची

1. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 164, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

2. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 164, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

3. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 165, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

4. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 165, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

5. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 166, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

6. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 166, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

7. संपादक रघुवीर सिंह मथाना, फौजी मेहर सिंह ग्रंथावली, पृ० 242, सुकीर्ति प्रकाशन, करनाल रोड़ कैथल।

Corresponding Author

Kuldeep Sharma*

Lecturer in Hindi, GSSS Singowal, Jind, Haryana

kuldeepmusker@gmail.com